परम पूज्य स्वामी श्री कृष्णानन्द जी महाराज

पीठाधीश्वर, श्री कैलास धाम आश्रम (श्री कैलास आश्रम ट्रस्ट), झूँसी, प्रयागराज

आध्यात्मिक गुरु | वेदान्ताचार्य | राष्ट्र एवं समाज चिंतक

परम पूज्य स्वामी श्री कृष्णानन्द जी महाराज समकालीन भारत के उन विरले संतों में हैं जिन्होंने सनातन वैदिक परम्परा, राष्ट्रसेवा और जनजागरण को अपने संन्यासी जीवन का ध्येय बनाया है। वे श्री कैलास धाम आश्रम (श्री कैलास आश्रम ट्रस्ट), झूँसी, प्रयागराज के आध्यात्मिक गुरु एवं पीठाधीश्वर हैं तथा आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित दशनामी संन्यास परम्परा के प्रतिष्ठित संत हैं। उनका जीवन आध्यात्मिक साधना, राष्ट्रचिंतन, नैतिक मूल्यों और समाज जागरण का प्रेरणास्रोत है।

प्रारम्भिक शिक्षा विज्ञान संकाय (PCM) में प्राप्त करने के पश्चात् वर्ष 2001 में उन्होंने सत्य एवं गुरु की खोज के लिए गृहत्याग किया।

लगभग 16 राज्यों का भ्रमण करने के उपरान्त उन्हें ऋषिकेश स्थित विश्वप्रसिद्ध श्री कैलास आश्रम में सद्गुरु का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जहाँ उन्होंने स्वामी धनराज गिरि जी महाराज की गौरवशाली परम्परा में दीक्षा ग्रहण की। यही वह परम्परा है जिसके आचार्यों ने स्वामी विवेकानन्द जैसे विश्वविख्यात संत को वेदान्त का ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने कैलास आश्रम सहित अनेक संस्थानों में वेदान्त, गोसेवा, आश्रम प्रबंधन तथा आध्यात्मिक जीवन का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा उत्तरकाशी सहित विभिन्न कैलास आश्रमों के प्रमुख के रूप में सेवा प्रदान की।

स्वामी जी के नेतृत्व में आश्रम में प्रतिदिन वैदिक परम्परा के अनुसार रुद्राभिषेक, प्रस्थानत्रयी (उपनिषद्, भगवद्गीता एवं ब्रह्मसूत्र) का स्वाध्याय, वैदिक आरती, श्री शिवमहिम्नः स्तोत्र, श्री शिवनीराजन स्तोत्र, शिवनामावली एवं त्रिवेणी स्तोत्र का नियमित पाठ होता है। वे विद्यार्थियों को वैदिक शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं तथा देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं, शोधकर्ताओं एवं अतिथियों के साथ धर्म, दर्शन और राष्ट्रनिर्माण पर सारगर्भित संवाद करते हैं।

स्वामी श्री कृष्णानन्द जी महाराज का सबसे विशिष्ट योगदान उनका "भ्रष्टाचार मुक्त भारत" जनजागरण अभियान है। उनका विश्वास है कि भ्रष्टाचार, व्यसन और अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि किसी भी राष्ट्र की प्रगति में सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती 23 जनवरी 2007 से लगभग 35 माह तक रामेश्वरम् में संकल्प लेकर कन्याकुमारी से नेपाल, नेपाल से कश्मीर और कश्मीर से दिल्ली तक की पैदल यात्रा की जिसमें 10 जुलाई 2008 को श्रीनगर के लाल चौक पर पहली बार राष्ट्र ध्वज फहराया । इसके साथ ही स्वामी जी ने पदयात्रा कर जन-जन को सत्यनिष्ठा, नशामुक्ति, नैतिक जीवन एवं राष्ट्रधर्म का संदेश दिया। इस यात्रा का समापन दिल्ली में राष्ट्रध्वज फहराकर भारत की एकता, अखण्डता और राष्ट्रभक्ति के संकल्प के साथ किया ।

उन्होंने तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, दमन एवं दीव, सिलवासा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, नेपाल, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड सहित अनेक राज्यों एवं क्षेत्रों में पदयात्रा कर लाखों लोगों को भ्रष्टाचार के विरोध, नशामुक्ति तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने अनेक ज़िलाधिकारियों, पुलिस अधीक्षकों, आयुक्तों, मुख्य सचिवों, शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा विभिन्न प्रशासनिक अधिकारियों को जीवनभर भ्रष्टाचार न करने और नशे से दूर रहने का संकल्प भी दिलाया।

वर्ष 2012 में उत्तराखंड के अस्सी गंगा की आपदा के दौरान उनके उल्लेखनीय राहत एवं सेवा कार्यों के लिए उत्तराखंड सरकार द्वारा विशिष्ट सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया तथा गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया। साथ ही उत्तराखंड में आयी 2013 की बाढ़ में भी स्वामी जी ने गाँव गाँव जाकर लोगों को आवश्यक सामग्री , वस्त्र आदि उपलब्ध करवाए ।

स्वामी जी का वर्तमान मिशन भ्रष्टाचार, व्यसन और जनसंख्या विस्फोट से मुक्त, नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से जागृत भारत का निर्माण है। उनका दृढ़ विश्वास है कि "आध्यात्मिकता और नैतिकता के बिना कोई भी राष्ट्र विश्वगुरु नहीं बन सकता।" वे युवाओं में चरित्र निर्माण, ईमानदारी, राष्ट्रभक्ति और सनातन जीवन मूल्यों का जागरण ही भारत के उज्ज्वल भविष्य का आधार मानते हैं।

जीवन संदेश:
"धर्म केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि सत्य, सेवा, सदाचार, राष्ट्रभक्ति और सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का जीवन-दर्शन है।"